प्रतिरक्षा भारती
Pratiraksha Bharti

भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ का मुख्य पत्र

जुलाई 2023 • वर्ष-विंशति (20) • अंक 07 • मूल्य : ₹ 10 • वार्षिक मूल्य : ₹ 120

डा. जितेन्द्र सिंह, केन्द्रीय मंत्री (भारत सरकार) से वार्ता सरकारी कर्मचारी राष्ट्रीय परिसंघ प्रतिनिधि मण्डल द्वारा

DMRL कार्मिक संघ को मान्यता प्रदान करते हुए निदेशक DMRL

आयुध निर्माणी कानपुर के कार्यसमिति चुनाव के विजयी प्रत्याशी

श्री सुरेन्द्र प्रसाद यादवः संयुक्त सचिव LS, DDP, MOD से कानपुर का प्रतिनिधि मण्डल मिला
तथा AWEIL समूह निर्माणियों के विषयों पर चर्चा हुई।

सम्पादक की कलम से

– साधू सिंह

मित्रो।

स्थापना दिवस के कार्यक्रम आप सभी ने बहुत अच्छी तरह किये जिसके लिये प्रतिरक्षा भारती और भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ अपने सभी कार्यकर्ताओं के प्रति क्रतिज्ञता ब्यक्त करते है। आप सभी को भारतीय मजदूर संघ की स्थापना दिवस की पुनः बधाई देता हूँ। हम सभी को ज्ञात है कि 23 जुलाई को दो महापुरुषों की जयंती होती है। श्रधेय बाल गंगाधर तिलक और अमर शहीद चंद्र शेखर आजाद। 23 जुलाई 1955 को हमारे माननीयों ने भारतीय मजदूर संघ की स्थापना एक राष्ट्रवादी मजदूर संगठन के रूप में की। 68 वर्ष का सफर हम सभी ने पूरा किया संगठन की दृष्टि से हम शून्य से शुरू होकर देश के ही नहीं पूरे विश्व के प्रथम क्रमांक के संगठन है। हम जो शून्य से शिखर की जो बात करते है। मुझे लगता है किसी भी संगठन का कोई शिखर नहीं होता निरन्तर और ऊंचाइयों तक पहुंचना हमारा लक्ष्य होता है।

हम सभी जानते है कि देश में अभी भी श्रमिकों और कर्मचारियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। आज भी हम असमानताओं के अंतर्गत काम करते है। आज भी समान कार्य का समान वेतन हमारे श्रमिकों को नहीं मिलता उदाहरण के रूप में देश के ठेका श्रमिकों को स्थायी कर्मचारियों के बराबर वेतन भत्ते मिलने के कानून है। परन्तु समान कार्य करते हुए भी ठेका श्रमिकों को कितना वेतन मिलता है यह किसी से छुपा नहीं है चाहे वह केंद्र सरकार हो राज्य सरकारें हो हमारे देशन के राजनैतिक दल हों या ट्रैड यूनियन हों। परन्तु ठेका श्रमिकों की दुर्दशा को कोई भी ठीक नहीं कर पा रहा है। ट्रेड यूनियन के लोग अपने बीच में ठेका श्रमिको की दुर्दशा पर कितने चिंतित है यह सोचने की बात है। हम सभी उनकी दुर्दशा पर बहुत कम गम्भीर होते है उनके शोषण को अपने सामने देखते रहते है। कुछ भी नहीं करते या करपाते है। हमने देखा है कि स्थाई कर्मचारियों की यूनियन ने ठेका श्रमिको की दुर्दशा पर कुछ बोलने की कोशिश की और ठेकेदार के भ्रष्टाचार को उजागर किया। तो वह ठेकेदार हमारे कार्यकर्ताओं पर भारी पड़ गया। प्रबंधन के साथ मिलकर अनुशासनिक कार्यवाही कराई हम अपने कार्यकर्ताओं को सुरक्षित नहीं कर पा रहे है। कुछ स्थानों पर ठेका श्रमिको की समस्या उठाने पर हमारे कार्य कर्ता चार्ज शिटेड है। हमने कई बार इस विषय को उठाया कि स्थाई कर्मचारियों की यूनियन को यह अधिकार होना चाहिये कि वह अपने संस्थानों में स्थाई कर्मचारियों के साथ साथ ही ठेका श्रमिकों और संविदा कर्मचारियों की समस्याओं को उठा सकते है। परन्तु अभी तक कुछ हो नहीं पाया दोनों तरह के कर्मचारियों के लिए अलग अलग यूनियन होने का कोई लाभ दिखाई नहीं देता ठेका श्रमिकों की यूनियन का पदाधिकारी ठेका श्रमिक होते है उन्हें बड़े आराम से ठेकेदार और संस्थान के अधिकारी बाहर का रास्ता दिखा देते है। ट्रेड यूनियन कुछ नहीं कर पाती और वह श्रमिक बेचारा हो जाता है। राज्य सरकार को लिखा जाता एवं वार्ता की जाती परन्तु कोई हल नहीं निकलता। केंद्र सरकार और राज्य सरकारो ने शिकायत के लिये पोर्टल खोले परन्तु कोई कार्यवाही नहीं होती।

आज भी न्यूनतम वेतन अलग अलग राज्यों में अलग अलग है पूरे देश के लिये एक वेज पालिसी नहीं बन पाई। भारत सरकार जिन चार कोड को लाने की बात करती है वह केवल पन्नों में ही सीमित है। बड़े बड़े प्रस्ताव पारित होकर रह जाते है परन्तु कुछ होता नहीं है हमारा महासंघ भी कई बार प्रस्ताव पास करके रह जाता है कुछ नहीं हो पाता कारण सरकारों की उदासीनता कोई भी सरकार इन समस्याओं का समाधान नहीं करना चाहती।

भारतीय मजदूर संघ भले ही प्रथम क्रमांक का संगठन है राष्ट्रीय स्तर पर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व कर रहा हो परन्तु सरकारों के उदासीन रवैये के कारण हम कुछ कर नहीं पा रहे हैं। हम सभी को अभी बहुत कुछ करना है। देश के उद्योगों और श्रमिकों के लिये बहुत कुछ करना शेष है। हम माननीय ठेंगड़ी जी के सपनों का संगठन तभी बना पाएंगे जब हमारे उद्योगों और श्रमिकों की स्थित ठीक होगी।

हम सब धैर्य के साथ इंतजार ही कर रहे हैं कि कोई सरकार आएगी देश के श्रमिकों के लिये कुछ करेगी परन्तु अभी तक तो इंतजार ही है वर्तमान सरकार भी कुछ अलग नहीं है अन्य सरकारों की ही तरह है। सामाजिक सुरक्षा के नाम पर कर्मचारियों को जो भी सुविधा है वह भी छीनी जा रही है सरकारी कर्मचारियों की पेंशन स्कीम समाप्त कर कर्मचारियों को अनिश्चितता के दौर में धकेल दिया गया है EPF95 के अंतर्गत आज भी कर्मचारी 1000 रु न्यूनतम पेंशन लेने को बाध्य है।

आयुध निर्माणियों के साथियों की जानकारी में है कि हम दो वर्ष का डीम्ड डेपुटेशन अगले माह पूरा कर रहे है चूंकि अभी तक नई HR पालिसी बनकर पूरी नहीं हो पाई है इसलिये सरकार डीम्ड डेपुटेशन बढ़ाने के लिये बाध्य है। हमने बहुत पहले ही कहा था कि यदि सभी नवनिर्मित DPSU अपनी HR पालिसी नहीं बना पाती तो निश्चित रूप से डीम्ड डेपूटेशन 1वर्ष या 2 वर्ष के लिये बढ़ सकता है। 1वर्ष के लिये डीम्ड डेपूटेशन बढ़ाने की कार्यवाही चल रही है अभी सभी 5 मंत्रियों के हस्ताक्षर के बाद 1 वर्ष डीम्ड डेपूटेशन बढ़ जाएगा।

यह सरकार की अपनी मजबूरी है। हमारी कोई डिमांड इस तरह की नहीं है हमने तो अपनी पूना कार्यसमिति में प्रस्ताव पास करके प्रसार भारती की तरह til to retirement सरकारी कर्मचारी रहने की मांग की है और आने वाले समय में जब भी सरकार HR पालिसी बना लेगी और ऑप्शन चुनने को कहेगी तब हम अपने प्रस्ताव के अनुसार til to रिटायरमेंट सरकारी कर्मचारी का ऑप्शन देंगे।

अभी कानपुर में सुरेन्द्र प्रसाद यादव JS(LS) के साथ एक मीटिंग OPF कानपुर में थी उनको अपने प्रस्ताव से हमने अवगत करा भी दिया कि हमारे कर्मचारी चाहते है कि हम सभी till to रिटायरमेंट सरकारी कर्मचारी रहना चाहते है सरकार तक कर्मचारियों की भावनाएं पहुंचाने का निवेदन भी किया है।

मित्रो आप सभी को यह ज्ञात है कि हम कारपोरेशन के विरुद्ध दिल्ली हाई कोर्ट में केस भी लगाए है और कारपोरेशन के विरुद्ध लगातार लड़ रहे है। एक साल डीम्ड डेपूटेशन से हम बहुत खुश नही है और न हमारी यह मांग थी हम till to retirement तक डीम्ड डेपूटेशन की लड़ाई लड़ रहे है।

इन तमाम कठिनाइयों से घबराकर बैठने से कुछ भी नहीं होने वाला हमें संघर्ष जारी रखना होगा।

❒

भारतीय मजदूर संघ (Bharatiya Mazdoor Sangh) स्थापना दिवस 23 जुलाई

– राम शंकर विश्वकर्मा

भारतीय मजदूर संघ भारत का सबसे बड़ा केंद्रीय श्रमिक संगठन है। इसकी स्थापना 23 जुलाई 1955 को हुई। भारत के अन्य श्रम संगठनों की तरह यह किसी संगठन के विभाजन के कारण नहीं बना वरन एक विचारधारा के लोगों का सम्मिलित प्रयास का परिणाम था। यह देश का पहला मजदूर संगठन है, जो किसी राजनैतिक दल की श्रमिक इकाई नहीं, बल्कि मजदूरों का, मजदूरों के लिए, मजदूरों द्वारा संचालित अपने में स्वतंत्र मजदूर संगठन है। स्थापना के पश्चात द्रुत गति से उन्नति करते हुए आज यह देश में सर्वाधिक सदस्य संख्या वाला मजदूर संगठन है। भारतीय मजदूर संघ ने अपने स्थापना के 52 वर्ष पूरे होने पर एक करोड़ से अधिक सदस्यता तथा पांच हजार से अधिक यूनियनों के साथ देश का पहले नम्बर का केन्द्रीय श्रमिक संगठन बना । भारतीय मजदूर संघ का कार्य भारत के 32 राज्यों तथा 44 उद्योगों में है। यह 1989 की सदस्यता सत्यापन के आधार पर पहली बार 1996 में देश का नम्बर एक मजदूर संगठन घोषित हुआ। वर्ष 2002 की सदस्यता सत्यापन के अन्तरिम परिणाम की घोषणा के अनुसार भारतीय मजदूर संघ 62 लाख से भी अधिक संख्या के साथ अब भी देश का सबसे अधिक सदस्यों वाला मजदूर संगठन है।

भारतीय मजदूर संघ की स्थापना से पहले मजदूर संगठन राजनीतिक पार्टियों से सम्बन्धित थे तथा पार्टी के मजदूर संगठन के रूप में कार्य करते थे। प्रारम्भ में अन्य मजदूर संगठनों का विरोध तथा व्यंग्य भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं को सहना पड़ता था, लेकिन भारतीय मजदूर संघ ने एक गैर राजनीतिक श्रमिक संगठन के रूप में अपना कार्य प्रारंभ किया तथा आज भी उसी सिद्धान्त पर कायम है। कोई भी राजनीतिक नेता इसका पदाधिकारी नहीं है तथा इसका कोई भी सदस्य राजनीतिक चुनाव न भारतीय मजदूर संघ ने अन्य मजदूर संगठनों से हटकर कई नये नारे तथा विचार श्रमिकों के सामने रखे। "भारत माता की जय" का उद्घोष पहली बार श्रमिक आन्दोलन में हुआ। भारतीय मजदूर संघ के कुछ सूत्र इस प्रकार हैं–

1. देश हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम।
2. बी.एम.एस. की क्या पहचान, त्याग–तपस्या और बलिदान।
3. नया जमाना आयेगा, कमाने वाला खिलायेगा।
4. राष्ट्र का औद्योगिकीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण, श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण

17 सितम्बर विश्वकर्मा जयन्ती को राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में मनाना तय किया गया।

भारतीय मजदूर संघ –

1) 1967 में सरकारी कर्मचारियों सहित सभी श्रमिकों के लिए बोनस की मांग करने वाला प्रथम श्रमिक संगठन।

2) 1969 में ही साम्यवाद के पतन की घोषणा करने वाला प्रथम सामाजिक संगठन।

3) 1989 में ही आर्थिक साम्राज्यवाद के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने वाला प्रथम संगठन।

1996 से देश के पहले क्रमांक के केन्द्रीय श्रम संगठन के नाते भारतीय मजदूर संघ अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन के सम्मेलनों में भारतीय श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करता आ रहा है।

राष्ट्रहित की चौखट के अन्तर्गत, मजदूरों के हित का एकमात्र उद्देश सामने रखकर काम करने वाला संगठन होने के कारण भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ता की दो तरफा जिम्मेदारी हो जाती है। राष्ट्र के सामने वह मजदूरों का प्रतिनिधी है तो मजदूरों के सामने वह राष्ट्र का प्रतिनिधी है जो मजदूरों को बताता है कि राष्ट्र के कष्ट क्या है? राष्ट्र की आकांक्षाएं क्या है? राष्ट्र के लिए क्या– क्या करना आवश्यक है? इन दोनों तरह की जिम्मेदारीयों का निर्वाह करना बहुत कठिन काम है। केवल अपनी यूनियन के सदस्यों के लिए मजदूरों की आर्थिक मांगो को लेकर कुछ उसकाने वाले भाषण देना सरल काम है। लेकिन भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ता का बहुत कठिन है, क्योंकि राष्ट्र के सामने मजदूरों का प्रतिनिधित्व ओर मजदूरों के सामने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व वह कर रहा है और इस दृष्टी से हमारे कार्यकर्ताओं को बार – बार स्वाध्याय वर्ग की आवश्यकता प्रतीत होती है।

राष्ट्र ऋषि

श्रद्धेय दत्तोंपन्त ठेंगड़ीजी

हम सभी इस बात से बहुत खुश नहीं कि डीम्ड डेपूटेशन एक वर्ष के लिये बढ़ गया। यह कोई हमारी अंतिम लड़ाई नहीं थी हम कोई इसे अपनी उपलब्धि भी नहीं मानते। लेकिन जो परिस्थितियों थी उनके अनुसार BPMS ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि सरकार एक या दो साल के लिये डीम्ड डेपुटेशन बढ़ाएगी क्योकि 7 DPSU की HR पालिसी अभी तक एप्रूव्ड नहीं हुई है। हमारा अंदाजा सही निकला। जो लोग कहते थे कि एक माह पहले HR पालिसी को फाइनल करके सभी को जबरन DPSU कर्मचारी बनाने का प्रयास सरकार करेगी। दूसरी तरफ यह भी दावा किया जाता रहा कि हम न्यायालय में है इसलिये सरकार डीम्ड डेपूटेशन को समाप्त नहीं कर सकती। BPMS दिल्ली हाई कोर्ट में है इसका जिक्र कभी वह लोग नहीं करते।

आप सभी को यह भी ज्ञात है कि BPMS ने अपनी पूना कार्य समिति में यह प्रस्ताव अप्रैल माह में पारित किया कि आयुध निर्माणियों के सभी कर्मचारियों को till to रिटायरमेंट सरकारी कर्मचारी घोषित किया जाय अर्थात हमारी लड़ाई सरकार से जारी है और न्यायालय में भी जारी है। हम कभी यह दावा नहीं करते कि कारपोरेशन समाप्त करने की लड़ाई को हम अकेले लड़ रहे है। जबकि हमारे मित्र संगठन हर जगह यह दावा करते दिखते है कि इस लड़ाई को मैं अकेले ही लड़ रहा हूँ। हर कामयाबी को अपनी कामयाबी बताने वाले नाकामयाबी की जिम्मेदारी कभी नही लेते। जबकि हम सामूहिक नाकामयाबी की जिम्मेदारी मानते है।

आज NPS को लेकर बड़ी आसानी से हमारे मित्र संगठन कहते है कि यह तो भाजपा सरकार ने लागू किया और BMS और BPMS उसका एक अंग है जबकि हम 2004 से ही NPS का विरोध करते आ रहे है। और हमारे विरोध के कारण NPS में कुछ महत्वपूर्ण सुधार भी हुए है। यह कभी नहीं कहते यह लोग की NPS को लागू कराने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। NPS ट्रस्ट के Trustee के रूप मे इनके बड़े नेता काम करते रहे। 2013 तक NPS एक executive आर्डर के द्वारा चला रहा था 2013 में PFRD। बिल दोनों सदनों में पास हुआ और NPS ने कानून का रूप धारण कर लिया। 2004 के बाद 10 साल तक चुप बैठे रहे न कोई विरोध न वदलाव न कोई सुधार। आज जब NPS राजनैतिक मुद्दा बन गया तो श्रेय लेने की होड़ लग गई और आंदोलन शुरू हुए। हम लगातार आंदोलन करते आये है। लेकिन अब वह भी मैदान में आ गए जिनकी सहमति से NPS लागू हुआ। क्या कारण है कि 2004 में आपने चुप्पी साध ली जो 2019 तक जारी रही। खैर देर आये दुरुस्त आये यह भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि अभी भी इस लड़ाई में सभी सम्मिलित हों यह नहीं चाहते। केवल jcm के घटकों को लेकर आंदोलन करना कहाँ की बुद्धिमत्ता है जो मान्यता प्राप्त नहीं है उनकी भी बड़ी संख्या है उनको कैसे नजरन्दाज किया जा सकता इसीलिये BPMS ने सभी को साथ लेकर आंदोलन करने का निर्णय लिया है। हम सभी मान्यता प्राप्त और गैर मान्यता प्राप्त सभी संगठनों को अपने आंदोलन में जोड़ रहे है। लड़ाई लम्बी चलने वाली है लड़ाई कठिन भी है लेकिन किसी लड़ाई को ईमानदारी से लड़ा जाय तो सफलता अवश्य मिलेगी।

❐

गीत

चन्दन है इस देश की माटी, तपो भूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा–बच्चा राम है।।ध्रु.।।

हर शरीर मंदिर सा पावन, हर मानव उपकारी है
जहाँ सिंह बन गये खिलौने, गाय जहाँ माँ प्यारी हैजहाँ सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है।।1।। हर बाला देवी की प्रतिमा...

जहाँ कर्म से भाग्य बदलते, श्रमनिष्ठा कल्याणी है
त्याग और तप की गाथायें, गाती कवि की वाणी है
ज्ञान जहाँ का गंगाजल सा, निर्मल है अविराम है।।2।। हर बाला देवी की प्रतिमा...

इसके सैनिक समरभूमि में गाया करते गीता हैं,
जहाँ खेत में हल के नीचे, खेला करती सीता है,
जीवन का आदर्श यहाँ पर, परमेश्वर का धाम है।।3।। हर बाला देवी की प्रतिमा...

चन्दन है इस देश की माटी, तपो भूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा–बच्चा राम है३।।

मेरी कामना

सुनता और पढ़ता आया हूँ कि इच्छाएं 'इत्यलम' कहना नहीं जानती और चाहों का चक्र कभी नहीं थमता । मगर मैं तो कामनाओं के वृत्त में 'दौड़ने का रसिक हूँ । पाने का अपना आनन्द होता होगा, किन्तु चाहने का सुख भी छोटा नहीं है, यदि चाह छोटी न हो । इसलिए चाहता हूँ ।

मनुष्य को पंगु और बौना बनाने वाली गरीबी मिटे,
जीविका के लिए जीवन रेहन न रखना पड़े,
रोटी इन्सान को न खाये ।।

मशीनें श्रम की कठोरता को घटायें,
उत्पादकता को बढ़ायें,
मगर वे श्रम का अवसर न छीनें,
न आदमी को अपना पुर्जा बना पायें ।।

पृथ्वी का दोहन विवेक पूर्वक हो,
प्रकृति से द्रोह न किया जाये ।।

दरिद्रता, दैन्य व अत्याचार को मिटाने का वीरावेश भड़के,
परन्तु क्रूरता बहादुरी का मुखौटा पहनकर न घूमे ।।

समाज और व्यक्ति राष्ट्र और विश्व में परस्पराश्रय हो,
परस्पर विरोध नहीं ।।

धनी–निर्धन, विद्वान–अनपढ़ और
शासक–शोषित का द्वैत मिटकर अद्वैत उभरे ।।

सुख विलासिता का,
सादगी रसहीनता और मनहूसियत का,
तप वर्जनाओं का,
कला कृत्रिमता का पर्यायवाची न बने ।।

सत्य संख्या में न दब जाये,
सौन्दर्य अलंकरण में न छिप जाये,
विज्ञान हिंसा का दास न हो ।।

जीवन और जगत् पर प्रकाश, आनन्द और करुणा का राज्य हो ।।

इन चाहों के चक्कर में मैं युग–युग भटकने को तैयार हूँ ।

दत्तोपंत ठेंगड़ी

साभारः– दत्तोपंत ठेंगड़ी जीवन–दर्शन

❐

भारतीय मजदूर संघ

- **संगठन में** : नियम नहीं, व्यवस्था होती है।
- **संगठन में** : सूचना नहीं, समझ होती है।
- **संगठन में** : कानून नहीं, अनुशासन होता है।
- **संगठन में** : भय नहीं, भरोसा होता है।
- **संगठन में** : शोषण नहीं, पोषण होता है।
- **संगठन में** : आग्रह नहीं, आदर होता है।
- **संगठन में** : संपर्क नहीं, सम्बन्ध होता है।
- **संगठन में** : अर्पण नहीं, समर्पण होता है।
- **संगठन में** : मैं ''नहीं''हम'' होता है।
- **संगठन में** : ''आत्मप्रशंसा'' नहीं ''सर्व सम्मान'' होता है।
- **संगठन में** : तोड़ना नहीं, जोड़ना होता है।

व्यक्ति नहीं संगठन महान ....!

इसलिए स्वयं को संगठन से जोड़े रखें। संगठन सामूहिक हित के लिए होता है, व्यक्तिगत ''स्पर्धा'' और ''स्वार्थ'' के लिए नहीं। प्रशंसा सबकी करो निंदा किसी की नहीं।

❐

औद्योगिक परिवार की अवधारणा और उद्योग में नैतिकता व चेतना की आवश्यकता

''विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमें दुनिया का यथार्थ रूप दिखाती है और नैतिकता हमें यह दिखाती है कि दुनिया कैसी होनी चाहिए? मनुष्य के मस्तिष्क के दो पहलू हैं, एक तो वह यथार्थ, जैसा है वैसा ही देख पाता है, और दूसरा पहलू यह दर्शाता है कि क्या होना चाहिए।

उपरोक्त पंक्तियाँ इस संसार तथा मनुष्य के दो पक्षों को दर्शाती हैं। पहला पक्ष यथार्थ को निष्पक्ष रूप से देखने और समझने को दर्शाता है. वहीं दूसरा पक्ष यह कहता है कि संसार के यथार्थ से संतुष्ट ना होकर उसे और अच्छा बनाना चाहिए। दूसरे पक्ष को ध्यान में रखते हुए श्री दत्तोपंत ठेंगडी जी ने बताया कि हमारा राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पक्ष अवांछनीय दिशा में जा रहा है।

1955 में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना के पश्चात उन्होंने कहा कि हमारी राजनीतिक व्यवस्था, पाश्चात्य मूल्यों से अत्यधिक प्रेरित है। साथ ही साथ इस व्यवस्था में भारतीय वास्तविकताओं की अनदेखी की गई है। इसलिए यह व्यवस्था भारत में उस आदर्श समाज की स्थापना नहीं कर सकती, जिसकी परिकल्पना हमारे संविधान की प्रस्तावना में की गई है और जो हमारे स्वतंत्रता आंदोलन का लक्ष्य भी था।

उनके इस निष्कर्ष का साधारण कारण उस समय की गतिविधियां थीं। पाश्चात्य मूल्यों तथा प्रथाओं का अंधाधुंध अनुसरण किया जा रहा था। उनका मानना था कि पश्चिम की परिस्थितियों तथा उनके मूल्य भारतीय यथार्थ से भिन्न हैं, अतः उनका अनुसरण हमारी समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता। उदाहरणार्थ अपने प्रसिद्ध लेख पश्चिमीकरण के बिना आधुनिकीकरण में उन्होंने कहा कि भारत के विकास का पश्चिम के मानकों द्वारा आकलन करना मूलतः गलत प्रक्रिया है। इन प्रयासों पर उचित प्रश्न उठाते हुए उन्होंने कहा कि क्यों सेक्सपीयर को पश्चिम का कालीदास नहीं कहा जाता और क्यों नेपेलियन को पश्चिम का समुद्रगुप्त नहीं कहा जाता इन्हीं आधारों पर उन्होंने भारतीय सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक विकास के पाश्चात्य मूल्यों या मानकों द्वारा किये गये आकलन को त्रुटिपूर्ण बताया।

भारतीय तथा पाश्चात्य समाज

भारतीय तथा पाश्चात्य समाज की अवधारणा को समझने के लिए एक सवाल हमें स्वयं से पूछना चाहिए। यह सवाल कई बार स्वयं ठेंगड़ी जी से भी पूछा गया था। सवाल यह है कि क्या हम पश्चिम के प्रगति के मापदंडो को अपना सकते हैं ठेंगड़ी जी ने समझाया कि इसका उत्तर भारतीय और पाश्चात्य समाज पर विचार और व्यवहार में निहित है।

समाजशास्त्र की दृष्टि से देखें तो हम पाएंगे कि समाजशास्त्री किसी भी समाज के अध्ययन में उस समाज के मूल्यों पर विशेष ध्यान देते हैं। यही मूल्य आगे चलकर समाजिक संबंधों को महत्व प्रदान करते हैं। उदाहरण के तौर पर पश्चिमी समाज में व्यक्तिगत उपलब्धि को अधिक महत्व दिया जाता है। अगर कोई अरबपति है तो संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन आदि देशों में वह अत्यधिक सम्मान प्राप्त करेगा। भारतीय समाज भौतिक पक्ष को महत्वपूर्ण नहीं मानता अतः इस समाज में किसी मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष को अधिक सम्मान मिलेगा। इस प्रकार एक तपस्वी जिसे स्वयं और ईश्वर का ज्ञान है, वह भारत में उच्च प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

उद्योग के माध्यम से धन संचय करने वाले पश्चिमी समाज में अपने व्यक्तिगत प्रयत्न से धन संचय करने वाला भी सम्माननीय होगा। वहीं भारतीय समाज में समाज और स्वजनों को अनदेखा करके धन कमाने वाले को स्वार्थी कहा जाएगा। ऐसा इसलिए है कि पश्चिमी समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अत्यंत महत्व दिया गया हैं, वहीं भारतीय समाज में व्यक्ति के हित से ज्यादा महत्व समाज को दिया जाता है।

एमिली दुर्कहेम ने अपनी किताब सुसाईड (Suicide) में तीव्र औद्योगीकरण तथा सामाजिक एकजुटता के पतन के बीच प्रत्यक्ष संबंध बताया। सामाजिक मूल्यों की कीमत पर प्रगति को पाश्चात्य समाज ने हितकर माना। भारत में सामाजिक मूल्यों की कीमत पर प्रगति को संकट के रूप में देखा जाता है न कि प्रगति के रूप में। इस तथ्य में कोई संदेह नही रह जाता है कि ठेंगड़ी जी द्वारा पश्चिमी मूल्यों और प्रथाओं का विरोध किसी काल्पनिक धारणा पर नहीं अपितु पाश्चात्य तथा भारतीय समाज की परिस्थितियों के व्यापक समझ पर आधारित थी।

यदि कोई, पश्चिम और भारत के बीच सामाजिक और आर्थिक व्यवहार को समझने की कोशिश करता है तो उसे एक बुनियादी अंतर अवश्य मिलेगा औद्योगिक क्रांति के पश्चात पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं / देशों ने कच्चे माल तथा निर्मित माल की खपत हेतु बाजार के लिए उपनिवेशवाद का सहारा लिया। अपने आर्थिक हितों को साधने के लिए उन्होंने बर्बर अत्याचार भी किये। परन्तु भारत में इस तरह की आर्थिक परिकल्पना कभी नहीं रही। प्राचीन काल में हमें बहुतेरे ताकतवर भारतीय साम्राज्यों का उल्लेख मिलता है जो व्यापार तथा संस्कृति के प्रचार हेतु सुदूर देशों तक गए, तब भी उनके द्वारा उपनिवेशीकरण का कोई प्रयास नहीं हुआ। अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर क्यों पश्चिम के देशों

ने ऐसे कुकृत्य किए परन्तु भारत ने नहीं ? इस प्रश्न का उत्तर दोनों समाजों के जीवन दर्शन में छिपा है। भारत समस्त संसार को एक परिवार मानता है। साथ ही साथ भारतीय समाज का यह मत है कि समस्त प्राणी ईश्वर की संतान है। पश्चिमी विश्व अपनी श्रेष्ठता साबित करने हेतु यूरोप केंद्रित विश्व की कल्पना करता है। दोनों समाजों के जीवन दर्शन में यही मूल अंतर है जिन्हें मानवीय मूल्य तथा नैतिकता आदि सिद्धांतो के द्वारा परिभाषित किया जा सकता है।

ठेंगड़ी जी ने हमेशा ही आर्थिक प्रथाओं तथा औद्योगिक, राजनीतिक और सामाजिक संबंधों में मानवीय मूल्यों का आह्वान किया।

नैतिकता तथा मानव मूल्यों की आवश्यकता

साधारण भाषा में समझें तो नैतिकता का अभिप्राय उन नैतिक सिद्धांतों से है, जो मानवीय कार्यों का मार्गदर्शन करते हैं। अब प्रश्न उठता है कि नैतिक सिद्धांत क्या हैं? नैतिक सिद्धांत वे आदर्श हैं, जिनका समाज की भलाई के लिए पालन किया जाता है। दैनिक जीवन में दूसरों की मदद करना, परिवार के सदस्यों की देखभाल करना तथा संकट के समय में समाज के सदस्यों का साथ देना नैतिक कर्तव्य है।

इसी प्रकार उत्पादन की प्रक्रिया में वातावरण की देखभाल करना, विकास की योजनाओं को बनाते समय श्रमिकों के उचित वेतन का ध्यान रखना, कर्मचारियों की सामाजिक सुरक्षा का प्रबंध करना आदि अर्थ जगत में नैतिक कार्य हैं। गांधी जी ठेंगड़ी जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी सहित भारतीय परंपरा के लगभग हर विचारक ने व्यक्तिगत और सार्वजनिक संबंधों में नैतिक मूल्यों पर बराबर जोर दिया, यही विचार भारतीय मजदूर संघ के कार्यकलाप का आधार है।

नैतिकता और आर्थिक व्यवहार

अर्थव्यवस्था में नैतिकता की प्रासंगिकता लंबे समय से बहस का हिस्सा रही है। मुक्त बाजार के पक्षधर ये मानते हैं कि आर्थिक गतिविधियों में नैतिकता संभव नहीं है, वहीं दूसरे पक्ष के लोग यह मानते हैं कि व्यवसाय में नैतिकता अत्यावश्यक है। इस बहस को स्वचालन और औद्योगिक क्रांति 4.0 के संदर्भ में समझा जा सकता है।

मुक्त बाजार के समर्थक, उत्पादन तथा लाभ बढ़ाने के लिए इस तकनीक को अपनाने का सुझाव देते हैं। वे उस पक्ष को नकार देते हैं कि इन प्रौद्योगिकियों को अपनाने से रोजगार के अवसरों में कमी आएगी। दूसरे पक्ष के अर्थशास्त्री इसे प्रतिगामी करार देते हैं। क्योंकि इससे भविष्य के समाज में असमानता बढेगी। महात्मा गाँधी के विचारों के अनुसार यह एक हिंसक निर्णय होगा क्योंकि भविष्य में इस कदम से समाज में अराजकता फैलेगी।

दत्तोपंत ठेंगडी जी ने पूर्वकाल में ही रोजगार पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन किया था। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि ये प्रथाएं अमानवीय हैं। कुल मिलाकर अर्थव्यवस्था में नैतिकता का जो सवाल है वह पश्चिमी विचारधारा है भारतीय विचारधारा इसके विपरीत सोचती है। इस पश्चिमी विचारधारा ने भारतीय अर्थव्यवस्था में 1990 के दशक के सुधारों के पश्चात बहुत ही ज्यादा प्रभावित किया।

भारतीय परंपरा में अर्थशास्त्र और नैतिकता

भारतीय परिस्थितियों में नैतिकता और व्यापार दोनों एक दूसरे के संपूरक हैं। दोनों परस्पर विरोधी नहीं हैं। कौटिल्य का मानना था कि आर्थिक गतिविधियों का उद्धेश्य समाज में शान्ति और समृद्धि सुनिश्चित करना है। इसी क्रम में महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के दो महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर आर्थिक गतिविधियों की व्याख्या की है। इन सिद्धांतों के आधार पर उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया। एक संसाधन वे हैं, जो बहते पानी की तरह होते हैं, अर्थात कभी खत्म नहीं होते और दूसरे वो जो निकट भविष्य में खत्म हो जाएंगे। उन्होंने इन दो तरह के संसाधनों को क्रमशः Current Economy और Reservoir Economy कहा इसी परिप्रेक्ष्य में उन्होंने हिंसा और अहिंसा की संभावनाओं का विश्लेषण किया। उन्होंने कहा कि जब संसाधन कम होते है, तो उनके लिए प्रतिस्पर्धा अधिक होती है और यह प्रतिस्पर्धा भविष्य में हिंसा का कारण सिद्ध हो सकती है। जे०सी० कुमारप्पा ने गॉधीयन इकॉनामीक थॉट नामक अपनी पुस्तक में ये बताया कि औद्योगिक क्रांति के बाद इंग्लैंड में कोयला एक तरह से विकास का ईंधन बन गया। यह Reservoir इकॉनमी का आगमन था तथा इसी कारण से वहाँ प्रतिस्पर्धा बढ़ी है, जिसके फलस्वरूप वहाँ हिंसा की घटनाओं में वृद्धि देखी गई।

वहीं दूसरी तरफ जब संसाधन प्रचुर मात्रा में हों तो प्रतिस्पर्धा कम होती है। अतः सभी को आवश्यकता के अनुसार उनका हिस्सा मिल जाता है इसलिए हिंसा की संभावना कम हो जाती है। इस प्ररिप्रेक्ष्य में भारतीय मजदूर संघ की गतिविधिओं को अहिंसक अर्थव्यवस्था की धुरी के रूप में देखा जा सकता हैं।

भारतीय मजदूर संघ रोजगार केंद्रित विकास तथा श्रमिकों के सामाजिक कल्याण का पक्षधर रहा है। अगर हम रोजगार को देखें तो यह समझ जाएंगे कि कम रोजगार का मतलब अधिक प्रतिस्पर्धा और अधिक हिंसा है, वहीं रोजगार केन्द्रित विकास अहिंसक अर्थव्यवस्था की परिकल्पना है।

श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के विचार नैतिकता के अनुरूप रहे हैं। उन्होंने कहा कि आर्थिक संबंधों में उद्देश्य तथा हमारी जिम्मेदारी दोनों का बोध हमें होना चाहिए। उनके अनुसार उत्पादन प्रक्रिया एक व्यापक राष्ट्रीय परियोजना का अंग है, जिसका अंतिम उद्देश्य संसार में अपने राष्ट्र के लिए सम्मानजनक स्थान को प्राप्त करना

है। अतः नियोक्ता तथा मजदूर दोनों ही राष्ट्रीय प्रगति के लिए कार्य कर रहे हैं। इस व्यवस्था में सरकार को नियोक्ता तथा मजदूर दोनों की अकांक्षा तथा जिम्मोदारी के बीच के नाजुक संतुलन को बनाए रखना चाहिए। सरकार को प्रत्यक्ष रूप से तभी हस्तक्षेप करना चाहिए जब एक पक्ष दूसरे पक्ष का अहित करने लगे तथा समस्त उत्पादन और विकास की प्रक्रिया प्रभावित हो जाए।

इन्ही धारणाओं पर भारतीय मजदूर संघ ने अपने 141 वीं, 142वीं, 143वीं और 144वीं केन्द्रीय कार्यसमिति बैठक में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का निजीकरण गरीबी को बढ़ाने वाली नीतियों, सरकार का कृषि के प्रति उदासीन रवैया, बढ़ती संविदा आधारित नियुक्तियां तथा बेरोजगारी का विरोध किया है।

दत्तोपंत ठेंगड़ी जी केवल चुनाव को सरकार और आम जनता के बीच संवाद का एक मात्र माध्यम नहीं मानते थे। उनका मत था कि सरकार तथा समाज के हितधारकों के बीच एक गोलमेज सम्मेलन की व्यवस्था होनी चाहिए. जहां समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों तथा समस्याओं का निराकरण किया जा सके।

इन्हीं आदर्शों के अनुरूप भारतीय मजदूर संघ ने 140वीं केन्द्रीय कार्य समिति बैठक में देश की आर्थिक परिस्थितियों पर चर्चा हेतु एक गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया था। समाज के विभिन्न हितधारकों के बीच निरंतर बातचीत भी एक नैतिक अभ्यास है क्योंकि

इससे समाज में समृद्धि आएगी तथा लंबे समय तक शांति बनी रहेगी।

समकालीन विश्व में नैतिकता की आवश्यकता

भारतीय परंपरा में नैतिकता की अवधारणा समझने के बाद एक स्वभाविक प्रश्न उठता है कि नैतिकता की चर्चा की क्या आवश्यकता आन पड़ी है? तो हमें यह समझना चाहिए कि कोई भी उसी चीज की इच्छा रखता है जो उसके पास या तो है नहीं या नगण्य है।

आज मजदूर जगत में अनेकों समस्याएं हैं, जैसे कि श्रमिकों को कम मजदूरी, कार्य स्थल की अमानवीय स्थिति, अर्थव्यवस्था में अनौपचारिकता, नई प्रौद्योगिकी की वजह से मजदूरों का विस्थापन तथा अच्छी नौकरियों की कमी इत्यादि मजदूरों के साथ–साथ नियोक्ता भी अशांत औद्योगिक संबंधो का सामना कर रहे हैं। इस तरह वर्तमान में श्रम जगत की जो समस्याएँ हैं वे मजदूर व नियोक्ता दोनों के विकास में बाधक हैं, आज मजदूर बद से बदतर जीवन जीने हेतु मजबूर हैं तथा नियोक्ता बाजार में कम होती मांग के कारण चिंता में है।

ये दोनों तथ्य एक दूसरे से जुड़े हैं मजदूर ही बाजार अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ा उपभोक्ता वर्ग है। अब उन्हें कम मजदूरी मिल रही है कम मजदूरी उनकी क्रय शक्ति को कमजोर कर रही है, जिससे मांग में गिरावट देखी जा रही है। दूसरी तरह से अगर इस तथ्य को समझें तो, नियोक्ता अपना मुनाफा बढ़ाने के लिए कम मजदूरी का भुगतान करते हैं, जिससे बाजार में मांग कम होती है, जिसके फलस्वरूप उत्पादन पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। कम उत्पादन होने से नियोक्ता कम लाभ कमाता है अतः मजदूरों का अहित करके नियोक्ता खुद भी प्रभावित होते हैं। इस प्रकार एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि बिगड़ते औद्योगिक संबंध पूरे देश के लिए हानिकारक हैं।

अब सवाल यह उठता है कि हमारी अर्थव्यवस्था की हालत इतनी बदतर क्यों हुई? इसका उत्तर यह है कि नियोक्ता वर्ग ने अनैतिक निर्णय लिए उन्होंने कम पारिश्रमिक दिया. कार्यस्थलों पर जरूरी मानकों को नहीं रखा अथवा माना, मजदूरों के सामाजिक कल्याण को अनदेखा कर दिया गया तथा कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण निर्णयों में उन्हें शामिल नहीं किया जाता है। इस तरह उन्होंने मजदूर वर्ग को एक महत्वपूर्ण सामाजिक भागीदार के रूप में कभी मान्यता नहीं दी। दूसरी तरफ कर्मचारियों ने भी कुछ अनुचित कार्य किये, कुछ श्रम संगठनों की बात में आकर अनैतिक मांगें रखीं, अवैध हड़तालों तथा हिंसा का भी सहारा लिया।

इस विश्लेषण के पश्चात यह प्रश्न हमारे सामने आता है कि हमारी भविष्य की रूपरेखा कैसी होनी चाहिए?

शांतिपूर्ण औद्योगिक संबंधों की ओर

शांतिपूर्ण औद्योगिक संबंध, मजबूत आर्थिक विकास की धुरी हैं। श्री दत्तोपंत ठेंगडी जी देश में शांतिपूर्ण औद्योगिक संबंधों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा कि मजदूर तथा नियोक्ता दोनों का उद्देश्य राष्ट्रीय विकास है. अतः उन्हें एक दूसरे के हितों का ध्यान रखना चाहिए अतंरराष्ट्रीय श्रम संगठन के मतानुसार सुदृढ़ औद्योगिक संबंध तथा सामाजिक संवाद, उत्पादकता तथा प्रतिस्पर्धा के लिए अनुकूल होते हैं तथा इससे कार्यस्थल की गुणवत्ता में भी सुधार आता है। आई०एल०ओ० ने औद्योगिक संबंध को सुदृढ़ करने हेतु सामाजिक संवाद का विचार दिया।

सामाजिक संवाद

आई०एल०ओ० के अनुसार सामाजिक संवाद का अर्थ सरकार नियोक्ता तथा मजदूरों के प्रतिनिधिओं के बीच हुई सूचना के आदान–प्रदान की प्रक्रिया से है। यह एक त्रिपक्षीय प्रक्रिया है, जिसमें सरकार एक आधिकारिक दल के नाते इसका हिस्सा होती है। यह संवाद द्विपक्षीय भी हो सकता है, जिसमें केवल प्रबंधन तथा मजदूरों के प्रतिनिधि मौजूद हों। यह प्रक्रिया अनौपचारिक या अधिकारिक अथवा दोनों हो सकती हैं। यह राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा उद्यम स्तर पर हो सकती है। सामाजिक संवाद का मुख्य लक्ष्य श्रम जगत के महत्वपूर्ण हितधारकों के बीच आम सहमति का निर्माण तथा लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ावा देना है। एक सफल सामाजिक संवाद की संरचना में महत्वपूर्ण आर्थिक व सामाजिक

मुद्दों को सुलझाने, सुशासन को प्रोत्साहित करने, सामाजिक और औद्योगिक शांति तथा स्थिरता एवं आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देने की क्षमता है।

सामाजिक संवाद को सुदृढ़ता से मूर्त रूप देने के लिए निम्नलिखित परिस्थितियों का होना आवश्यक है।

- मजबूत व स्वतंत्र मजदूर तथा नियोक्ता संगठन
- सामाजिक संवाद में भाग लेने की इच्छा।
- संगठन करने तथा सौदेबाजी के अधिकार का सम्मान
- संस्थागत समर्थन

आई०एल०ओ० ने सामाजिक संवाद के सकारात्मक पहलू को दुनिया में फैलाने की कोशिश की है हालांकि इन सकारात्मक पहलूओं को किसी बड़ी सफलता के रूप में नहीं देखा जा सकता। दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने औद्योगिक शांति की आवश्यकता को महसूस किया तथा श्रम जगत में शांति सुनिश्चित करने के लिए औद्योगिक परिवार की अवधारणा को साकार करने का सुझाव दिया।

औद्योगिक परिवार

इस अवधारणा के अनुसार श्रम जगत से जुड़े सभी लोग जैसे कि नियोक्ता, मजदूर तथा उनके आश्रित इत्यदि एक ही परिवार का हिस्सा हैं। इन सभी लोगों का लक्ष्य राष्ट्रीय विकास ही है। अतः इन सभी वर्गों को एक दूसरे के हितों का ध्यान रखना चाहिए। यह दृष्टिकोण उद्योग में संतुलन बनाए रखने के साथ–साथ प्रत्येक संभावित समस्या से हितधारकों को संरक्षित करने की दिशा में लक्षित है, जो कि समग्र रूप से राष्ट्र हित में है।

संक्षेप में कहें तो यह अवधारणा एक दूसरे के लिए नैतिकता और सद्भाव को बढ़ाव देती है। इसका उद्देश्य त्रिपक्षीय परामर्श के आधार को और व्यापक बनाना है ताकि यह और प्रासंगिक हो सके। इस अवधारणा के आगे का रास्ता उद्योग के विभिन्न वर्गो के बीच एकजुटता और एकता की भावना तथा बड़े पैमाने पर श्रमिकों और समाज के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध में निहित है। औद्योगिक परिवार की अवधारणा का मुख्य उद्देश्य श्रमिक तथा नियोक्ता वर्ग को जागरूक बनाना है। इस जागरूकता के द्वारा सामाजिक संवाद जैसे अभ्यास को और सुदृढ़ कर एक परंपरा के रूप में स्थापित किया जा सकता है। यही परंपरा औद्योगिक परिवार की अवधारणा का आधार है।

औद्योगिक परिवार की अवधारणा इतनी भी साधारण नहीं है, जितनी प्रतीत होती है। इस अवधारणा की गहराई को कुछ प्रश्नों के माध्यम से जाना जा सकता है।

इस अवधारणा को परिवार का नाम क्यों दिया गया ?

समाजशास्त्री परिवार को एक ऐसा सामाजिक समूह मानते हैं जो भावनात्मक संबंधों पर आधारित होता है। परिवार एक सामाजिक और आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करता है। एक समूह के रूप में परिवार के लक्ष्य और आकांक्षाएं एक समान होते हैं। इसी प्रकार उद्योग जगत में श्रमिक तथा नियोक्ता का एक ही लक्ष्य हैरू राष्ट्रीय विकास। वास्तव में इस अवधारणा के अनुसार, दत्तोपंत ठेंगडी जी श्रम जगत के सभी हितधारकों के बीच एक घनिष्ट संबंध चाहते थे। यह अवधारणा सामाजिक संवाद की प्रक्रिया से ज्यादा व्यापक है। सामाजिक संवाद, औद्योगिक शांति सुनिश्चित करने हेतु एक तंत्र प्रदान करता है। तत्र के बजाय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी औद्योगिक शांति हेतु एक संस्था का निर्माण करना चाहते थे। यह संस्था सामाजिक संवाद की प्रक्रिया से ज्यादा स्थायी है। ठेंगड़ी जी चाहते थे कि यह तंत्र देश में स्थायी शांति बहाल करने में सहायक बने

औद्योगिक परिवार की अवधारणा को मुर्त रूप कैसे दिया जा सकता है?

इस प्रक्रिया पर ठेंगड़ी जी श्रम जगत के हितधरकों की चेतना पर निर्भर थे। यह चेतना पूरी तरह से नैतिकता पर आधारित है। यह नैतिकता हमें, हमारे आसपास के मनुष्यों की देखभाल करने तथा सभी को एक परिवार का हिस्सा मानने के लिए प्रेरित करती है। यह चेतना सुनिश्चित करती है कि समाज में कोई अन्याय न हो। यह चेतना औद्योगिक परिवार की अवधारणा का मूल है। यह चेतना ही औद्योगिक परिवार की अवधारणा को वास्ताविकता में बदल सकती है।

औद्योगिक परिवार में सरकार की भूमिका क्या होगी ?

समाज की समस्याओं को हल करने के लिए ठेंगड़ी जी समाज की क्षमता में विश्वास करते थे। वे भारत के उस समाज में विश्वास करते थे जो हमेशा आत्मनिर्भर होने का प्रयास करता था। इस प्रकार अगर औद्योगिक परिवार की अवधारणा भारत में वास्तविकता का रूप लेती है तो समाज अपनी समस्याओं को हल करने में खुद सक्षम हो जाएगा। सरकार की भूमिका न्यूनतम हो जाएगी। सरकार का काम केवल यह होगा कि कानून और नीतियों के माध्यम से सभी हितधारकों के बीच संबंधों को सौहार्दपूर्ण बनाए तथा श्रमिक और नियोक्ता वर्ग के सामाजिक कल्याण को सुनिश्चित करे ।

आज समस्त विश्व को आर्थिक संबंधों के नियमों को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है। लोभ और लालच के बजाय, आर्थिक कार्यों में नैतिकता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

आई०एल०ओ० औद्योगिक कलह को शांत करने हेतु सामाजिक संवाद का सुझाव देता है। दूसरी ओर औद्योगिक परिवार की अवधारणा, चेतना और अपनेपन की भावना से स्थायी शांति की ओर लक्षित है। इन आदर्शों को प्राप्त करने हेतु विश्व को साथ आने की आवश्यकता है।

❐

कार्यकर्ता

—योगेन्द्र सिंह चौहान
IR Member : TCL Group

हम सभी संघ के अच्छे, जिम्मेदार कार्यकर्ता हैं। इस नाते अपने कार्य की प्रगति के लिए अपने को किस—किस प्रकार की सिद्धता करनी पड़ेगी इस दृष्टि से सोचना पड़ेगा। हम सभी के अनुभव में आया है और सभी को सतत् चिन्तन करने योग्य जो बातें हैं उनका बार—बार स्मरण करना होगा।

- **उपदेश से नहीं: उदाहरण से संस्कार**

कार्यकर्ताओं को भी निरन्तर सद्गुणों का संस्कार मिलता रहे, इस पर भारतीय मजदूर संघ का सबसे अधिक ध्यान रहा है और संघ कार्यपद्धति की सभी छोटी—मोटी बातें इसी हेतु विकसित की गई हैं, उनमें कई प्रकार के कार्यक्रम, बौद्धिक, बैठकें आदि भी निरन्तर होते रहते हैं। उन सभी कार्यक्रमों और वातावरण के द्वारा कार्यकर्ता आवश्यक संस्कार पाते है, परन्तु केवल बौद्धिक या बैठकों के माध्यम से या अन्यान्य कार्यक्रमों के वातावरण से ही नहीं। अपितु, सबसे अधिक प्रभावी कारण और एक है— वह याने अपने से वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के उदाहरण से ही वास्तविक एवं दीर्घगामी संस्कार हम पाते हैं। यह भी हम लोगों ने सुना होगा कि किसी नये व्यक्ति को यदि भारतीय मजदूर संघ क्या है, यह समझना है तो किसी पुस्तक को पढ़ने के बजाय किसी कार्यकर्ता का व्यवहार देख लीजिए— उसके २४ घण्टे की दिनचर्या को निकट से परख लीजिए, ऐसा विश्वास पूर्वक हमको कहते आना चाहिए। यानी संघ का एक—एक कार्यकर्ता ही संघ का जीता—जागता प्रतीक बनकर खड़ा हो, यही हम चाहते हैं। यदि सर्वसामान्य कार्यकर्ता से भी ऐसी अपेक्षा हैं, तो हम जैसे उत्तरदायी कार्यकर्ताओं से तो और अधिक अपेक्षा होगी। इसलिए हम सभी का उदाहरण निर्दोष एवं पारदर्शी होना अति आवश्यक है। ऐसे उदाहरणों से ही अन्य सभी को आवश्यक प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है।

- **पूजनीय डॉक्टर जी का उदाहरण**

इस सम्बन्ध में हम सभी जानते हैं कि स्वयं संघ के संस्थापक पूजनीय डॉक्टर जी ने अत्यन्त तेजस्वी उदाहरण प्रस्तुत किया है। संघ की प्रत्येक छोटी—बड़ी पद्धति का उन्होंने ही बीजारोपण किया। यह कार्य उन्होंने बौद्धिक—बैठकें आदि के द्वारा ही नहीं बल्कि उन सभी विषयों में स्वयं के आचरण के द्वारा स्वयंसेवकों के सम्मुख अत्यन्त उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत किया। स्वयं शाखा पर नित्य जाना, समय का पालन करना आदि सभी बातों पर वे विशेष ध्यान देते थे।

आजकल तो हम सभी श्री गुरुदक्षिणा की पद्धति से अवगत हैं। गुरु कौन हैं, श्री गुरुदक्षिणा के पीछे का भाव क्या है आदि सभी बातें हमें अवगत हैं। किन्तु संघ के प्रारम्भ में स्वयंसेवकों को पूजनीय डॉक्टर जी ने कैसे समझाया होगा? सबसे पहले श्री गुरुपूजा की सूचना स्वयंसेवकों को जब मिली तो उनके बीच में अपने गुरु कौन हैं, किसकी पूजा करनी है आदि बातों के बारे में तरह—तरह की कल्पना व चर्चा होने लगी। परन्तु श्री गुरुपूजा उत्सव के प्रारम्भ में भगवा ध्वज लगाया गया और सबसे पहले स्वयं पूजनीय डॉक्टर जी ने आगे बढ़कर ध्वजप्रणाम किया और अपनी गुरुदक्षिणा ध्वज के सामने समर्पित की और स्वयंसेवकों को भी वैसे ही करने के लिए बताते हुए कहा कि भगवा ध्वज ही अपने राष्ट्रजीवन का प्रतीक है। उसी को हम अपना गुरु मानते हैं, किसी व्यक्ति को नहीं। उस गुरु की ही पूजा हमें करनी हैं। इस प्रकार संघ में विकसित हुई प्रत्येक छोटी—मोटी बातें भी जैसे— कार्यकर्ताओं की कथनी और करनी में कोई अन्तर न हो, दोनों एक रूप बनकर रहें आदि, यह संघ की सबसे बड़ी विशेषता रही है। ❐

राष्ट्रऋषि दत्तोपंत ठेंगड़ी

**हमारा कार्यकर्ता यही हमारे कार्य का आधार है।
हमारा कार्य कार्यकर्ताओं के कारण
ही बढ़ने वाला या घटने वाला है।
यही हमारा साधन है।
हमारे कार्यकर्ताओं के माध्यम से
हमारे ध्येयसंकल्प का दर्शन
समाज कर सकता है।**

There are numerous advantages of artificial intelligence (AI). Here are some of the key advantages:

1. **Automation:** AI can automate repetitive and mundane tasks, freeing up human resources to focus on more complex and strategic tasks. This helps improve efficiency and productivity.

2. **Accuracy:** AI systems can process large amounts of data quickly and accurately, minimizing human errors. This is particularly beneficial in tasks requiring high precision, such as data analysis and financial forecasting.

3. **Decision Making:** AI algorithms can analyze complex data sets, identify patterns, and make data-driven decisions faster than humans. This can lead to more informed and objective decision-making processes.

4. **Personalization:** AI can collect, analyze, and interpret large amounts of customer data to personalize user experiences. This helps businesses understand customer preferences, deliver tailored recommendations and improve customer satisfaction.

5. **Efficiency and Cost Reduction:** By automating manual tasks and streamlining processes, AI can help organizations reduce operational costs and improve overall efficiency. It can also optimize resource allocation, manage inventory, and predict maintenance needs, resulting in cost savings.

6. **Assistance and Support:** AI-powered virtual assistants, chatbots, and customer support systems can provide 24/7 assistance to customers, addressing queries and resolving issues in a timely manner. This leads to improved customer service and satisfaction.

7. **Innovation and Research:** AI enables scientists, researchers, and developers to analyze large amounts of data, discover patterns, and gain deeper insights. This accelerates advancements in various fields, such as healthcare, finance, and technology.

8. **Risk Reduction:** AI systems can be used to identify potential risks and predict future outcomes in areas like finance, cybersecurity, and traffic management. This helps organizations proactively mitigate risks and minimize potential damages.

9. **Medical Applications:** AI can assist in faster and more accurate diagnosis by analyzing medical data, reducing the chances of misdiagnosis. It can also assist in drug discovery, patient monitoring, and personalized treatment plans.

10. **Enhancing Human Capabilities:** Rather than replacing humans, AI has the potential to enhance their capabilities. By automating routine tasks, AI allows humans to focus on creative thinking, problem-solving, and innovation.

It is important to acknowledge that AI also presents challenges and potential disadvantages, such as ethical concerns, job displacement, and privacy issues. These need to be carefully considered and addressed to fully utilize the advantages of AI.

❒

While there are numerous advantages of artificial intelligence (AI), it also has some potential disadvantages. Here are some of the key disadvantages:

1. **Job Displacement:** AI has the potential to automate tasks that were previously performed by humans. This may lead to job displacement and unemployment in certain industries, especially for low-skilled or repetitive tasks.

2. **Lack of Creativity and Intuition:** AI systems are based on algorithms and machine learning, which may not possess human-like creativity, intuition, or emotional intelligence. This can limit their ability to solve complex problems that require abstract thinking or emotional understanding.

3. **Lack of Human Judgment:** AI systems make decisions based on algorithms and data analysis. They may not possess the same level of judgment, ethics, or decision-making capability as humans. This can raise concerns about biases in decision-making processes.

4. **Dependence and Reliability:** AI systems are dependent on data and require continuous updates to stay relevant and accurate. They are also prone to errors or malfunctions, which can have serious consequences in critical areas like healthcare or auto nomous vehicles.

5. **Security and Privacy Risks:** AI systems often collect and analyze large amounts of user data. This can raise concerns about privacy, as personal information may be vulnerable to hacking or misuse if not properly protected. Additionally, AI systems can be manipulated or hacked, leading to potentially disastrous consequences.

6. **Lack of Human Interaction:** Excessive reliance on AI systems may decrease human-to-human interaction, leading to social isolation and a decline in interpersonal skills. This is particularly relevant in areas like customer service or personal relationships.

7. **Ethical Dilemmas:** AI technology raises complex ethical questions. For instance, decisions made by AI systems may not align with societal norms or values. There are also concerns about the use of AI in autonomous weapons and the potential for unintended consequences.

8. **Cost and Accessibility:** Developing and implementing AI systems can require significant investments and resources. This may limit the accessibility of AI technology, particularly for smaller businesses or less developed regions.

9. **Unemployment and Economic Inequality:** As AI continues to advance, it may lead to a significant shift in the job market, potentially resulting in higher unemployment rates and widening economic inequality between individuals with AI-related skills and those without. It is important to address these disadvantages by implementing appropriate regulations and ethical frameworks to ensure responsible development and use of AI technology.

❒

While there are numerous disadvantages of Short Term Employment

1. **Limited Work Experience:** Short term employment often means you have not had the opportunity to gain extensive work experience in a particular field. This can make it challenging to qualify for higher-level positions or roles that require specific expertise.
2. **Limited Job Security:** Short term employment is typically temporary and may not offer long-term job security. There is often uncertainty about the duration of the employment, making it difficult to plan for the future or commit to long-term financial obligations.
3. **Limited Benefits:** Short term employees may not receive the same benefits or perks as full-time employees. This could include health insurance, retirement plans, paid time off, or other employee benefits that are typically offered to permanent employees.
4. **Lack of Career Growth:** Short term employment can inhibit career growth as it may not provide the same opportunities for promotion, skill development, or advancement within a company. Employers may be less likely to invest in the professional growth of short-term employees compared to those in permanent positions.
5. **Difficulty in Establishing Relationships:** Short term positions often limit the time available to build professional relationships with colleagues or supervisors. This can hinder networking opportunities and references that are commonly built over longer periods of employment.
6. **Inconsistent Income:** Short term employment may not offer a consistent income stream. Without a stable source of income, financial planning and goal setting can become challenging.
7. **Difficulty Obtaining Loans:** Since short term employment does not offer long-term job security, it may pose difficulties in obtaining loans such as mortgages or car loans. Lenders typically prefer stable employment history to assess creditworthiness.
8. **Limited Benefits of Employment Contracts:** Short term employment contracts may not offer the same level of protection or legal benefits as longer-term contracts. This can make it harder to address workplace grievances or ensure fair treatment in case of disputes.
9. **Lack of Company Loyalty:** As short term employment may not involve a strong sense of loyalty to a specific company, employees may be less invested in the overall success or culture of the organization. This can impact motivation and commitment.
10. **Psychological Stress:** The constant search for short term employment opportunities, coupled with the uncertainty of future employment, can cause psychological stress and anxiety. The pressure to secure consistent work can be mentally draining.

❐

The Life of a Rishi (Dattopant Thengadi)

C. K. Saji Narayanan

In Valmiki Ramayana (2.19.20), Kaikeyi asks Rama to leave for the forest at the earliest. Rama pleasantly accepts it saying he is not after worldly wealth; he always wanted to live like a Rishi (ऋषिभिस्तुल्यं) entirely devoted to Dharma alone (केवलं धर्ममास्थितम्) India's history is the creation of a long chain of such sacrificing Rishi like figures who reigned in different walks of social life. Shri Dattopant Thengadi is the latest shining link in the chain. Hence he is honoured by the term "Rashtra Rishi".Though many positions in power and awards came to him, he rejected all of them with utmost humility. After emergency in 1977, many seniors requested him to become minister or MP in the Janata Party regime. However, he rejected all such requests as he had decided to leave political and parliamentary life forever. From that time, Thengadiji freed himself from all the posts even in BMS and worked for the organisations till the end only as a guide without any portfolio. He continued to inspire thousands of activists. When he was awarded Padma Bhushan in 2003, then also he respectfully refused to accept it.He regularly toured the country to address RSS swayamsevaks in meetings and training camps. He maintained contacts all over India through "person to person, heart to heart and door to door". Senior activists took his guidance on organisational and other matters. He continued to be the most revered ideologue in Sangh and parivar organisations after the demise of both Deendayal Upadhyayji and Shri Guruji.In the Kanpur conference of BMS in 1970, Thengadiji declared communism would soon disappear from the world. Within 20 years, the world witnessed the fall of communism in all the Communist countries in the world. Similarly in his book 'Third Way' (1995 edition P.114) he wrote: "The days of capitalism are numbered; it will not last even up to 2010 A.D. The search is already going on for 'The Third Way.'" In the mid-September of 2008, when a global financial crisis started from Wall Street and spread to all streets, many proponents of capitalism termed it as the "demise" of capitalism. While the famous prophecies of Karl Marx were proved false by the passage of history, Thengadiji's true vision transcended time and place. He was a "Drashta" (visionary seer) in the real sense.As an ardent RSS swayamsevak, wherever he worked, his life was his message. To cite and example, once, Thengadiji came to Tatanagar to attend a BMS meeting. He stayed in the quarter of a labourer. On the same day, the well-known Communist leader Shri S.A. Dange also came to attend another meeting in the same area and stayed in a luxury hotel. Dange's communist followers questioned their leaders on this issue. Thengadiji usually felt no difference in travelling in the second and third class compartments of trains as well as in flights. Such live examples have contributed to the growth of our organisation immensely.He authored innumerable books of originality and high intellectual content which emanated not only from his ideological conviction but also from his first-hand experience of the relevant issues. His forwards written to many books were also evidences of his intellectual mastery. Three books authored by him during the last phase of his life, namely 'Third way', 'Karyakarta' and 'Dr Ambedkar aur Samajik kranti ki yatra' are his masterpieces. He profusely quoted the ideas of personalities ranging from A.K. Gopalan of the communist party, Charu Mazumdar of CPIML up to Khalil Gibran. He abundantly quoted from world literature also. He was able to speak fluently in Marathi, Hindi, English, as well as Malayalam and Bangla. His declared position, "no compromise on fundamentals" might have displeased some.

He had extensively travelled almost all parts of the world except the pacific region. On 28th April 1985, in his visit to China as a part of BMS delegation, the Beijing Radio broadcasted his speech for twenty minutes in Hindi with Chinese translation. A World Trade Union Conference was held in Moscow in November 1990 in which Thengadiji participated. It highlighted the failure of the market economy as well as communism and raised the big question, what the third alternative is. Thengadiji had already turned to consolidate the ideas of a third alternate, which later came out as the famous book the 'Third Way'. In his Washington speech in 1993, Thengadiji said, human being everywhere prefers to be status-quo-ist and self-complacent. However, the international economic order will be provoked by circumstances to turn to Indian ideas. Sarcastically he quoted a famous poet's 'God', who said:

"If not goodness, let calamity

Toss him unto my Bosom."

❒

Government ORDERS

सत्यमेव जयते

F No Z. I 6025 I 112023l CGIJS-lll Govt. of India Min. of Health & Family Welfare Department of Health & Family Welfare Directorate General of CGHS CGHS Bhawan. RK Puram -13. New Delhi. Dated 30 June. 2023

Subject: Treatment of CGIIS pensioner beneficiaries and others at Jawaharlal Institute of Postgraduate Medical Education and Research (JIPMER), Puducherry regarding

With reference to the above subject the undersigned is directed to state that Javaharlal Institute of Postgraduate Medical Education and Research (JIPMER. Puducherry shall provide treatment on cashless basis to CGHS pensioner beneficiaries and other entitled class of beneficiaries as per the detail given below :

a) CGHS Pensioners and other beneflciaries entitled for cashless treatment like ex-MPs , ex-Governors. former Judges of Suprenre Court of India . former Judges of High Courts, Freedom Fighters, etc. holding a Valid CGHS Card are eligible for cashless treatment at JIPMER, Puducherry.

b) Entitled CGHS beneficiaries shall present their CGHS Card for verification at CGHS Help Desk. They shall submit a self attested copy of CGHS Card, In case of treatment of a dependant family member copies of the CGHS card of self and family member shall be submitted.

c) Help Desk at JIPMER refers the beneficiaries to OPD / Investigations / Indoor treatment as the case may be.

d) Bills in physical form along with copy of CGHS card shall be submitted by JIPMER in the last week of month to the office of Addl. Director. CGHS, Chennai.

e) For room rent bills shall be raised as pef JIPMER rates. If. JIPN4ER room rent rates are not available. then CGHS rates fbr empanelled hospitals would apply. For other treatment procedures / investigations JIPMER shall raise the bill to CGF{S as per JIPMER rates. Ward entitlement of CGHS beneflciaries at JIPMER shall be as per their ward entitlement at CGHS empanelled hopsitals.

f) JIPMER shall create a separate Bank Account for CGHS benefrciaries to reimburse the bills by CGHS.

g) Additional Director. CGHS. Chennai shall process the bills expeditiously and payment shall be credited into the Bank Account created by JIPMER for CGHS.

h) No preferential treatment shall be provided to CGHS beneficiaries.

I) JIPMER shall provide implants available at the Institute and the beneficiaries shall not have option to choose Specific Implants of their choice. If any implant is not available. JIPMER shall procure the same and CGHS shall reimburse the implant at the rate at which it has been procured by JIPMER.

j) Medicines prescribed b-v JIPMER's doctors for OPD treatment or at the time of discharge from JIPMER will be collected by the beneficiaries through CGHS.

k) CGHS pensioners and others eligible for cashless treatment can avail treatment without any mandatory referral from CGHS.

l) Additional Director. CGHS. Chennai shall contact JIPMER. Puducherrv for the seamless inmplementation of this initiative. ❒

F No S. 110111/90/2016CGHS/(HEC)/AYUSH/PT-II/255-281 Ministry of Health & Family Welfare Directorate General of CGHS Office of the Director, CGHS R. K. Puram, Sec-13, New Delhi Dated 05 July, 2023

Subject : Revision of room rent for CGHS empanelled AYUSH Health Care Organizations and Empanelment of IPD AYUSH (Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani and Siddha) Hospitals reg.

The matter regarding revision of room rent of CGHS empanelled AYUSH Health Care organisations has been under consideration of MoHFW for some time. In this regard the undersigned is directed to convey, the approval of the Competent Authority for revision of the room rent and modified terms & conditions for the empanelment of AYUSH Hospitals under CGHS as per the details given below :

1. The revised room rent for private AYUSH Hospitals empenelled under CGHS shall be as under :

Category	Existing Room Rent	Revised Room Rent
General Ward	Rs. 500	Rs. 1000
Semi-Private Ward	Rs. 1000	Rs. 2000
Private Ward	Rs. 1500	Rs. 3000

2. It has been decided to empanel hospitals under Unani and Siddha systems also in addition to the Hospitals under Ayurveda, Yoga and Naturopathy. The existing NABH accredited AYUSH Hospitals shall be allowed to continue on CGHS panel by signing the new MoA and acceptance letter for CGHS rates and terms & conditions and submission of revalidated PBG.
3. Hospitals which are shortlisted for empanelment under CGHS, have to onboard on the NHA Platform, within 30 days, failing which their empanelment would be rejected.
4. The ceiling of Rs. 1000/- as one day combined package for both Yoga & Naturopathy procedures (Rs. 250/- per day as one day yoga therapy package for Yoga & Rs. 750/- per day as one day package treatment for Naturopathy), shall be allowed as per the Annexures - N2 & Y2 of O.M. dated 09.11.2017. However, rates, room rent and number days will be counted as per the clarification ussued by CGHS on 30-09-2022.
5. CGHS/CS (MA) **beneficiaries** may directly obtain consultation/treatment from the empanelled Hospitals / Centres for Yoga & Naturopathy for a period upto two-weeks (ceiling) and shall be eligible for reimbursement, subject to **prior intimation** to their respective Ministries/ Department, in respect of serving CGHS / CS (MA) beneficiaries and to the concerned ADs of CGHS cities in respect of CGHS pensioner beneficiaries. There should be a gap of at least **3 months** for the treatment if the patient undergoes upto two-weeks treatment and a gap of at least **45 days** for the treatment if the patient undergoes upto one-week treatment.
6. The empanelled AYUSH Hospitals shall also be permitted to provide OPD consultation after referral by CMO/SMO/MO. However, medicines shall be prescribed only from **CGHS formulary** and shall be obtained from CGHS AYUSH Wellness Centres.
7. The CGHS inspection squad will make surprise visits for the empanelled Hospitals/Centres, atleast once in a month or as per the complaints received to ensure and address the quality and safety treatment to the beneficiaries including performance of the Hospitals as per MoA.
8. The Application for empanelment under CGHS is available in CGHS website and shall be submitted enclosing the requisite documents.
9. These orders are valid from the date of issue.
10. This issues with approval of Competent Authority and the concurrence of IFD, MOHFW vide CD No. 971 dated 26.06.2023.

❒

F No Z. I 6025 I 112023l CGIJS-lll Govt. of India Min. of Health & Family Welfare Department of Health & Family Welfare Directorate General of CGHS, CGHS Bhawan. RK Puram -13. New Delhi. Dated 30 June. 2023

Subject: Treatment of CGHS pensioner beneficiaries and others at Postgraduate Medical Education and Research (PGIMER), Chandigarh regarding

With reference to the above subject the undersigrred is directed to state that Post Graduate InstitLrte of Medical Education and Research (PGIMER). Chandigarh shall provide treatment on cashless basis to CGHS pensioner beneflciaries and other entitled class of beneficiaries as per the detail given below :

a) CGHS Pensioners and other beneflciaries entitled fbr cashless treatment like ex-MPs . ex-Governors, former Judges of Srprerne Court of India. former Judges of High Courts, Freedom Fighters, etc.. holding a Vatid CGHS Card are eligible fbr cashless treatment at PGIN4ER" Chandigarh.

b) Entitled CGHS beneficiaries shall present their CGHS Card fbr verification at CGHS Help Desk. They shall submit a self attested copy of CGHS Card, In case of treatment of a dependant famill,member copies of the CGHS card of self and family member shall be submitted.

c) Hetp Desk at PGIMER refers the beneficiaries to OPD / Investigations / Indoor treatment as the case mav be.

d) Bills in physical fbrm along with copy of CGHS card shall be submitted BY PGIMER" Chandigarh in the last week of month to the office of Addl. Director. CGHS. Chandigarh.

e) For room rent bills shall be raised as per PGIMER rates. It. PGIMER rates are not availabte, then

CGHS rates for empanelled hospitals would apply. For other treatment procedures/investigations, PGIMER shall send bill to CGHS as per PGIMER rates.

f) Ward entitlement of CGHS beneficiaries at PGIMER shall be as per their ward entitlement at CGHS empanelled hospitals.

g) PGIMER shall create a separate Bank Account for CGHS benefrciaries to reimburse the bills by CGHS.

h) Additional Director. CGHS. Chandigarh shall process the bills expeditiously and payment shall be credited into the Bank Account created by PGIMER for CGHS.

i) No preferential treatment shall be provided to CGHS beneficiaries.

j) PGIMER shall provide implants available at the Institute and the beneficiaries shall not have option to choose Specific Implants of their choice.

k) Medicines prescribed by PGIMER's doctors for OPD treatment or at the time of discharge from PGIMER will be collected by the beneficiaries through CGHS.

l) CGHS pensioners and others eligible for cashless treatment can avail treatment without any mandatory referral from CGHS.

m) Additional Director. CGHS. Chandigarh shall contact PGIMER. Chandigarh for the seamless inmplementation of this initiative.

❒

E-56 / 2022-2023 / CGHS / TVM / 2321 Govt. Of India, Ministry of Health & Family Welfare, Central Government Health Scheme. Office of the Additional Director, Kesavasapuram, Thiruvananthpuram. Dated 06 July. 2023

CGHS Wellness Centre TR III, Vanchiyoor will start functioning in the new building PS Towers, Tutors Lane, Statue, GPO, Thiruvananthpuram 695 001 from 10.07.2023 (MOnday). ❒

GENC MEETING POINTS with Dr. Jitendra Singh

Dear Friends,

A Meeting under the banner of GENC was held with Dr. Jitendra Singh Ji.

The following were present :

(1) Shri MP Singh, VP/BMS.

(2) Shri Sadhu Singh, GS/GENC.

(3) Shri Mukesh Singh, GS/BPMS.

(4) Shri Virendra Sharma, Member JCM & Co-ordinator Ministry Affairs.

(5) Shri MM Deshpande, GS/BRMS.

(6) Shri Dilip Chakravarti, BRMS.

(7) Shri Anant Pal, Postal.

(8) Shri SN Pal, Postal.

(9) Shri MK Jawada, Survey of India.

(10) Shri Santosh Sharma.

(11) Shri Deendayal Shukla, AFHQ.

Points raised/Discussed :

(1) Scraping of NPS. Minister stated that Govt has constituted a committee and further action will be taken after it's study.

(2) Grant of notional increment to retairees on 31st Dec and 30th June. MoS stated matter under examination and consideration.

(3) To consider date of sanction of post for conversion to OPS of those recruited after Jan 2004. Mos stated matter is under examination and legal opinion being sought.

(4) promotion from AD to DD in AFHQ. Mos stated that very soon the matter will be resolved.

(5) Settlement of issues in topographical cadre of Survey of India. Mos assured early settlement of the matter.

For information of all.

Virendra Sharma. ❒

''संगठन की प्रत्येक ईकाई का कार्यकर्ता
उतना ही महत्वपूर्ण है जितना शीर्षस्थ नेतृत्वकर्ता''

–शिवेन्द्र सागर शर्मा

506, आर्मी बेस वर्कशॉप के कार्यसमिति चुनाव के विजयी प्रत्याशी।

3 BRD एयरफोर्स चण्डीगढ़ में इण्डस्ट्रियल कैन्टीन के विजयी प्रत्याशी।

स्थापना दिवस कार्यक्रम : पुणे – महाराष्ट्रा

RNI No. MAHBIL/2002/8760 **Publication Date : 23 July 2023** **MONTHLY NEWS PAPER**

Postal Regd. No. Misc-II/C.P.M//007/K.PH.O./2020 dt 29-12-2020 (for 2021-23)• Posted on Dt. 26,27th Monthly

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें इस पते पर भेजिये।

बुक पोस्ट

If undelivered please return to :

"Pratiraksha Bharti"

C/o. Bharatiya Pratiraksha Mazdoor Sangh
2, Naveen Market, Kanpur - 208 001

Mob. : 9450153677, Tel./Fax : 0512-2332222

Website : www.bpms.org.in

E-mail : gensecbpms@yahoo.co.in, cecbpms@yahoo.in

Publisher and Owner : Bhartiya Pratiraksha Mazdoor Sangh, 2 Naveen Market, Kanpur-208001
Printed at Chhaya Press 8/208, Arya Nagar, Kanpur-208002 ● Mob. : 9839223650